

## विचार बिन्दु

शास्त्र पढ़कर भी लोग मूर्ख होते हैं, किन्तु जो उसके अनुसार आचरण करता है वो ही वस्तुतः विद्वान है। -अज्ञात

## त्रिदोषशामक आयुर्वेद चिकित्सा पर एक सामयिक दृष्टि

आयुर्वेद आयु की समग्र विज्ञान है जिसमें स्वस्थ व्यक्ति के स्वास्थ्य की रक्षा एवं बीमार व्यक्ति की बीमारी को दूर करने के संबंध में महत्वपूर्ण और मूलभूत सिद्धान्त प्रतिपादित किये गये हैं। अगर हम सिद्धान्त शब्द को व्यापक अर्थों में देखते हैं तो आयुर्वेद की तीन मूलभूत संहिताओं में कम से कम 3 हजार से अधिक स्पष्ट दिशा-निर्देश उपलब्ध हैं। इन दिशा-निर्देशों या सिद्धान्तों के प्रतिपादन का कार्यकाल कम से कम आठवीं या नौवीं शताब्दी ईसा-पूर्व से लेकर सातवीं शताब्दी ईसवी तक विस्तारित है। इन निर्देशों में कुछ ऐसे निर्देशों जिनका सर्वाधिक उपयोग होता है, या जो एक से अधिक परिस्थितियों में लागू होते हैं, उनकी संख्या ही सैकड़ों में है। ये सभी सिद्धान्त आयुर्वेद की मूल आत्मा कहे जा सकते हैं और पिछले तीन हजार साल से इनका अनवरत उपयोग आयुर्वेदचार्यों द्वारा होता आया है।

मूलभूत सिद्धान्त आज भी यथावत उपयोगी हैं, किन्तु हमें ज्ञान की अनंतता को नहीं भूलना चाहिये। ज्ञान की सीमायें अनन्त हैं। विगत 100 वर्षों में ही आयुर्वेद या उससे जुड़ी वनस्पतियों, द्रव्यों, चिकित्सा, रसायन और सिद्धान्तों पर लगभग एक लाख से अधिक शोधपत्र तो वैश्विक स्तर पर प्रतिष्ठित जर्नल्स में ही प्रकाशित हो जा चुके हैं। इसके साथ ही युक्ति-व्यापार्य, दैव-व्यापार्य एवं सत्त्वावजय के अन्तर्गत आने वाले विषयों और सिद्धान्तों को भी सम्मिलित कर लें तो शोधपत्रों की संख्या कई लाख में बढ़ती है। स्वाभाविक है कि तीन हजार साल की लम्बी यात्रा में ज्ञान के नये आयाम भी विकसित हुये हैं। नवीन वैज्ञानिक शोध के साथ ही आयुर्वेदचार्यों द्वारा पीढ़ियों से अर्जित किया जा रहा अनुभवजन्य ज्ञान भी जुड़ा है, जिससे आयुर्वेद सुदृढ़ हुआ है। आयुर्वेद में ज्ञान के उत्पादन को इस लम्बी यात्रा में कुछ ऐसे सिद्धान्त या निर्देश भी जुड़ सकते हैं जो संभावना से इनकार नहीं किया जा सकता, जिनका उल्लेख मूलभूत संहिताओं में भले स्पष्ट रूप से न हो परन्तु समकालीन आयुर्वेद चिकित्सा में इनका महत्वपूर्ण स्थान हो सकता है। आज की चर्चा आयुर्वेद के मौलिक सिद्धान्तों में हो रहे नवाचार या नवाचारी सिद्धान्तों पर केन्द्रित है। यहाँ प्रारंभ में ही यह स्पष्ट करना उपयोगी होगा कि आयुर्वेदचार्यों इन मसलों को विवाद का विषय कह सकते हैं, परन्तु मेरे विचार से समकालीन विषय में आयुर्वेद को पूर्णरूपेण प्रतिष्ठापित करने में इस विचार-विमर्श का महत्वपूर्ण योगदान हो सकता है।

सर्वप्रथम आयुर्विज्ञान की समग्रता का सिद्धान्त देखना उपयोगी होगा। मेरा व्यक्तिगत रूप से यह मानना है कि समाज, देश और विश्व का स्वास्थ्य आज इस बात पर निर्भर करता है हम विविध चिकित्सा पद्धतियों को देख और समझ कर, आयुर्वेद के मूलभूत सिद्धान्तों के प्रकाश में विश्लेषणात्मक दृष्टिकोण रखते हुये, समकालीन आयुर्वेद चिकित्सा कार्यों में उनका सामंजस्य बैठायें। नवाचारी एवं त्वरित रूप से प्रभावी आयुर्वेद चिकित्सा हेतु मूल संहिताओं, वैज्ञानिक शोध एवं पीढ़ियों से जुड़े रहे अनुभवजन्य ज्ञान का परीक्षण और प्रमाण-आधारित निर्णय समकालीन आयुर्वेद चिकित्सा के लिये अनिवार्य है। इसे आयुर्विज्ञान की समग्रता का सिद्धान्त कहा जा सकता है।

दूसरा विषय वैज्ञानिक प्रसंस्करण द्वारा औषधि-प्रभावकारिता-वृद्धि का सिद्धान्त कहा जा सकता है। आधुनिक वैज्ञानिक शोध से अनेक आयुर्वेद औषधियों में उपलब्ध सेकेंडरी मेटाबोलाइट्स (माध्यमिक चयापचयी द्रव्यों) के विविध संयोगों को बेहतर रूप से जाना और समझा जा सका है। संहिताओं में समान रोग के लिये अनेक द्रव्यों या योगों का वर्णन है। इन योगों में प्रायः सभी प्रभावी भी पाये गये हैं, तथापि किसी विशेष औषधि या योग की, किसी रोग विशेष के विरुद्ध, तुलनात्मक प्रभावितता को अलग और बेहतर रूप में समझा जा सका है। यह प्रभावितता पौधों में सेकेंडरी मेटाबोलाइट्स की अनुपातिक मात्रा पर निर्भर करती है। इसके साथ ही कुछ औषधीय पदार्थों में ऐसे विशिष्ट मोलीक्यूलस की खोज भी हुई है, जो किसी प्रजाति विशेष में विशिष्ट औषधीय गुणों के लिए मूल रूप से उपयोगी हैं। शोध से इन मेटाबोलाइट्स की समुचित मात्रा जो किसी रोग विशेष एवं व्यक्ति विशेष के लिये कारगर हो सकती है, उस पर भी शोध हुआ है। प्रभाविततावदकता एवं सुरक्षा के मध्य तालमेल करते हुये शोध से विकसित एवं घनीभूत औषधियां रोगों को ठीक करने में शीघ्रतापूर्वक प्रभावी भी पायी गयी हैं। इनमें जल-घुलनशील एक्सट्रैक्ट, अल्कोहल-

ऑक्सीडेटिव स्ट्रेस और इनफ्लेमेशन में कमी आते ही रोग-शमनकारी योग अधिक प्रभावी और त्वरित कार्य करते हैं। यही कारण है कि रोग शमन हेतु किसी भी निर्दिष्ट योग की पूर्ण फलश्रुति या परिणाम, रसायन योगों को साथ में दिये बिना समकालीन सामाजिक, आर्थिक और पर्यावरणीय परिस्थितियों में मिलना संभव नहीं होता।

घुलनशील एक्सट्रैक्ट या वसा में घुलनशील एक्सट्रैक्ट प्रमुख हैं। इनमें औषधि-विशेष में आज तक ज्ञात सेकेंडरी मेटाबोलाइट्स का फुल-स्पेक्ट्रम एक्सट्रैक्ट या घनीभूत द्रव्य चिकित्सा में बहुत उपयोगी और अधिक प्रभावी होता है। यही कारण है कि आज फुल-स्पेक्ट्रम एक्सट्रैक्ट वाली औषधियों का बाजार में बोलबाला बढ़ता जा रहा है और आयुर्वेदचार्यों द्वारा चिकित्सा में इनका अधिकाधिक उपयोग हो रहा है।

तीसरे, चौथे और पांचवे मुख्य सिद्धान्तों को एक साथ समझना उपयोगी होगा। मैं इन्हें त्रिदोष-भडकाऊ जीवनशैली का सिद्धान्त, त्रिदोष-भडकाऊ काल का सिद्धान्त और त्रिदोष-शामक रसायन-प्रभाव का सिद्धान्त कहता हूँ। हालाँकि, आयुर्वेद की संहिताओं में रसायन चिकित्सा का मूल उद्देश्य स्वस्थ व्यक्ति के स्वास्थ्य की रक्षा है। तथापि, समकालीन समाज में शायद ही ऐसा कोई संदर्भ-पुरुष मिल सके जिसके दोष, अग्नि, घ्राण, उत्सर्जन क्रियायें सम हों और आत्मा, इंद्रियाँ व मन निर्विकार हो। वस्तुतः हर व्यक्ति एक से अधिक स्वास्थ्य समस्याओं से ग्रसित है।

बुरा मानिये या भला, वास्तविकता यह है कि आज वे पुरुष या महिलायें विरले ही मिलते हैं जिनकी दिनचर्या, रात्रिचर्या या ऋतुचर्या, वास्तव में प्रज्ञापरायण या असातत्येन्द्रियार्थ संयोग से मुक्त हो (अगर आप उनमें से एक हैं तो आप हमारी शोध का विषय हैं)। स्वाभाविक है कि ऐसी स्थिति में वात, पित्त और कफ तो दिन-रात भडकते रहते हैं। ऐसी स्थिति में यदि दोष-आधारित चिकित्सा प्रारंभ भी करें तो भी निदान-परिवर्जन, अर्थात् रोग का कारण समाप्त करना, मुश्किल हो जाता है। हमारा काल आहार-विहार के सत्यानाश का काल हो रहा है। ऐसे समय में जब रोग होने के बाद भी रोगोत्पत्ति के मूल कारणों से मुक्ति पा सकने की दिशा में नहीं बढ़ पा रहे हैं, तब सर्वदोषप्रकोपक स्थिति सामने ही है। इसे आप त्रिदोष-भडकाऊ जीवनशैली का सिद्धान्त और त्रिदोष-भडकाऊ काल का सिद्धान्त कह सकते हैं।

ऐसी परिस्थितियों में, स्वस्थ हो रहे रोगी के स्वास्थ्य की रक्षा हेतु रसायन प्रयोग एवं रोग-निवारण हेतु चिकित्सा एक साथ किया जाना अनिवार्य है। इस सिद्धान्त के अनुसार रोग को ठीक करने के लिये युक्ति-व्यापार्य आयुर्वेदचार्यों द्वारा कितना भी सटीक योग क्यों न तय किया जाये, वह तब तक शीघ्र-प्रभावोत्पादक एवं श्रेष्ठ फलदायी नहीं रहेगा जब तक कि रसायन योगों को साथ-साथ नहीं दिया जाये। इसका तात्पर्य यह हुआ कि आज कोई भी औषधि-पत्रक रसायन-विहीन नहीं हो सकता है। आधुनिक वैज्ञानिक परिप्रेक्ष्य में देखें तो रोग-शमनकारी योग अधिक प्रभावी और त्वरित कार्य करते हैं। यही कारण है कि रोग शमन हेतु किसी भी निर्दिष्ट योग की पूर्ण फलश्रुति या परिणाम, रसायन योगों को साथ में दिये बिना समकालीन सामाजिक, आर्थिक और पर्यावरणीय परिस्थितियों में मिलना संभव नहीं होता। एनी शब्दों में देखें तो त्रिदोष शामक चिकित्सा का सिद्धान्त यह स्पष्ट करता है कि त्रिदोष-भडकाऊ काल में रह रहे लोगों, जिनके आहार-विहार, स्वस्थवृत्त व सद्गत का घालमेल हो गया हो, या पूरी तरह दरकिनार हो चुका हो, उनके त्रिदोष (वात, पित्त, कफ) अस्त-व्यस्त ही रहते हैं। अतः आज आयुर्वेद की त्रिदोष-शामक चिकित्सा ही पूर्ण-प्रभावकारी एवं शीघ्र-फलदायी हो सकती है।

आज की इस चर्चा का हमारे जीवन में महत्त्व क्या है? व्यक्तिगत स्तर पर हमें यह ध्यान रखना होगा कि हम आयुर्वेद और आयुर्वेदचार्यों की मदद से स्वस्थ बने रहने की दिशा में निरंतर आगे बढ़ें। स्वस्थ जीवनशैली औषधि (हेल्दी लाइफस्टाइल मेडिसिन) का प्रतिदिन उपयोग करें। वसा और शर्करा के माध्यम से कुल ऊर्जा-प्राप्ति में कमी लावा, भोजन में फल, सब्जियाँ, फलियाँ, साबुत अनाज और सूखे मेवे बढ़ावा, नियमित रूप से शारीरिक गतिविधियों, व्यायाम, योग, ध्यान आदि में शामिल होने को प्राथमिकता दें। व्यसन-मुक्त जीवन, संतुलित भोजन, शांत जगह में रात्रि की नींद, व्यायाम और सद्भावना को जीवनयापन का अंग बनायें। और अंत में आयुर्वेदचार्यों से आग्रह है कि वे हर रोगी के रोग-शमन में त्रिदोष-शामक रसायन चिकित्सा की सार्थकता पर धनात्मक दृष्टिकोण से विचार और क्रियान्वयन करें। साथ ही उनसे आग्रह यह भी है कि अपने प्रमाण-आधार को समझता प्रदान करते हुये आहार, निद्रा, व्यायाम, व सद्वृत्त के युक्तियुक्त संयोजन को चिकित्सा-पत्रक का अंग बनाने पर भी ध्यान दें।

-अतिथि सम्पादक,

डॉ. दीप नारायण पाण्डेय

(इंडियन फारेस्ट सर्विस से सेवा निवृत्त व वर्तमान में राष्ट्रीय आयुर्वेद संस्थान में विजिटिंग प्रोफेसर) (यह लेखक के निजी विचार हैं और 'सर्वभौमिक कल्याण के सिद्धान्त' से प्रेरित हैं।)

## महाराष्ट्र के कतकरी कत्था बनाने में निपुण होने के कारण राजस्थान में कथौड़ी कहलाए



पन्नालाल मेघवाल

राजस्थान की कथौड़ी जनजाति महाराष्ट्र में कतकरी नाम से जानी जाती है। उनकी सर्वाधिक जनसंख्या महाराष्ट्र राज्य के कोलाबा, जना, नासिक, पूना

और खानदेश जिलों में है। इनको दो उप समूहों 'दोर कथौड़ी' और 'सोन कथौड़ी' में बंटे देखा जा सकता है। वेल्सिंग ए. एन. ने अपनी पुस्तक 'कतकरीज' में लिखा है कि 'कतकरी जनजाति है, जिनके पास ना तो स्वयं की कोई जमीन है और ना ही कोई निश्चित परंपरागत व्यवसाय है। वे मूल रूप से शिकारी, कोयला बनाने वाले, वन उत्पाद इकट्ठा कर बेचने वाले, बहते पानी से मछली पकड़ने वाले तथा कभी-कभी कृषि एवं कृषक मजदूरी करने वाले हैं। कतकरी अब भी अपनी आदिम समाज की विशेषताओं के प्रतीक हैं। कथौड़ी आज भी दौन-दौन तथा सर्वाधिक पिछड़ी अवस्था में जी रहे हैं।' मूलतः कथौड़ी या कतकरी कत्था बनाने में विशेषज्ञ रहे हैं। जंगल में खेर के पेड़ के तने से निकलने वाला गाढ़ा भूरे रंग का पदार्थ ही कत्था है। कथौड़ी और कतकरी दोनों शब्दों का उद्गम मराठी भाषा के शब्द 'कत' या 'कथ' से बना है इसे कटचू भी कहते हैं। जबकि कथौड़िया शब्द कथौड़ी का गुजराती रूपांतरण है और गुजरात राज्य में इसका पर्याप्त प्रयोग किया जाता है। शेरिंग एम. ए. ने कथौड़ी और कतकरी जनजाति का अपनी पुस्तक में वर्णन किया है कि 'कथौड़ी मूल आदिम प्रजाति के हैं जो उत्तरी कोंकण के पहाड़ों और जंगलों में रहते रहे हैं। इन्हें मैला भील के रूप में भी जाना जाता है। वे जलाने की लकड़ी, कोयला

और शहर बेचते हैं। वे श्रम करने को हमेशा तैयार रहते हैं। क्षेत्रीय जनजाति समाज में उनकी सामाजिक प्रतिष्ठा सबसे निम्न है और उन्हें गांव के अंदर रहने की अनुमति नहीं होती है। कतकरी कत्था का निर्माण करते हैं, जिसे खेर के पेड़ से निकाला जाता है। वे बिना किसी कारण के काम छोड़ कर चले जाते हैं और कई बार मजदूरी भी छोड़ जाते हैं।' पूना गजेटियर के अनुसार 'कतकरी हवेली, मावल, जुनार, खेड और पूना में देखे जा सकते हैं। वे यहाँ के निवासी नहीं हैं, कोंकण से आए हैं। मानसून का मौसम कोंकण में गुजराते है लेकिन अक्टूबर से मई तक यहाँ श्रमिक के रूप में कार्य करते हैं। ये

पश्चिमी भारत की असभ्य एवं निर्धनतम जनजाति से। निश्चय ही कथौड़ी या कतकरी जनजाति अपने मूल स्वरूप में खानाबदोश रही है और निम्नतम परिस्थितियाँ हैं। यह जनजाति पहाड़ों और जंगलों में निवास करती रही है। इनकी गरीबी ने ही इन्हें खानाबदोश बनाया है। ये किसी भी श्रम कार्य के लिए कहीं भी जाने को तैयार रहते हैं। कत्था उत्पादन में यह निष्णात हैं। भारत के पुराने गजेटियर के अनुसार कथौड़ी-कतकरी पुरानी आदिम जनजातियों में से एक है।

-पन्नालाल मेघवाल,

वरिष्ठ लेखक एवं स्वतंत्र पत्रकार

## मालपुरा में नहीं निकले ताजिये, कावड़ यात्रा को लेकर भी बना संशय

मालपुरा, (निसं)। अतिसंवेदनशील मालपुरा शहर में आजादी के बाद से कई बार उपजे साम्प्रदायिक तनाव तथा तनाव के दौरान पुलिस व प्रशासन के आलाधिकारियों के सामने शांति व कानून व्यवस्था एक चुनौती के रूप में सामने आने के बाद प्रशासन द्वारा वर्ष 2020 में मालपुरा शहर में दोनों ही समुदायों के यात्रा व धार्मिक जुलूसों के मार्ग परिवर्तित कर नवीन मार्गों का निर्धारण तो कर दिया लेकिन परस्पर दोनों समुदायों की आम सहमति नहीं होने के चलते बीते तीन साल से मालपुरा में दोनों ही समुदायों के त्यौहारों की खुशियां व परम्परायें लुप्त हो रही हैं। शहर में बार-बार उत्पन्न होने वाले साम्प्रदायिक तनाव का प्रशासन द्वारा

■ मालपुरा में प्रशासन द्वारा धार्मिक जुलूस व यात्राओं के मार्ग बदलने से लुप्त हो रही त्यौहारों की खुशियां

परस्पर दोनों समुदायों की आम सहमति व दोनों समुदायों के खुदखुद होने के हस्तक्षेप से रास्ता निकाल तनाव के हालातों को खत्म कर एक-दूसरे के त्यौहारों में शरीक हो गंगा जमुनी तहजीबों की मिशाल बनने के सार्थक प्रयास किये जाने के बजाय सत्कालीन पुलिस व प्रशासनिक अधिकारियों द्वारा आनन-फानन में बैठकें आयोजित कर उच्चाधिकारियों व जिला प्रशासन को

मालपुरा में अमन चैन व शांति व्यवस्था की बहाली के लिए धार्मिक जुलूस व यात्राओं के मार्ग बदलने को ही एक मात्र जरिया बता परम्परागत रास्तों यहाँ तक की दूध छाण स्टेट हाईवे जैसे सड़क मार्ग से भी कावड़ यात्रा सहित अन्य जुलूस व यात्राओं के निकलने पर प्रतिबंध लगा वैकल्पिक बायपास सड़क मार्ग का निर्माण करवाया गया। प्रशासन द्वारा बिना परस्पर सहमति के प्रशासनिक स्तर पर ही रास्ते परिवर्तन किये जाने के बाद दोनों ही समुदायों ने इन नवीन रास्तों को अस्वीकार करते हुए अपने धार्मिक जुलूस व यात्राओं की परम्पराओं को स्थगित करना ही मुनासिब समझा है। प्रशासन द्वारा शहर में किसी भी आयोजन से पूर्व

प्रशासनिक स्वीकृति लेने का आदेश जारी कर देने से ना तो हिन्दू समाज का दशहरा व कावड़ यात्रा का जुलूस निकला और ना ही मुस्लिम समुदाय का ईद व मोहरम का जुलूस निकला। शनिवार को भी मोहरम का बड़ा पर्व होने के बावजूद भी प्रशासनिक स्वीकृति के साथ-साथ प्रशासन के निर्धारित नये मार्गों से मोहरम का ताजिया निकलने पर सामाजिक सहमति नहीं होने से ताजिये नहीं निकले। हालाँकि प्रशासन ने एक दिन पूर्व फ्लैग मार्च निकाल ड्रॉन कैमरों से निगरानी सहित शहर में भारी पुलिस जाला तैनात किया गया। सूत्रों की मानें तो दोनों ही समुदायों ने प्रशासन द्वारा निर्धारित किये गये नवीन मार्गों का खुलकर विरोध करने पर

प्रशासनिक कार्यवाही के अंदेश से लोग चिन्तित हैं। लेकिन दबी जुबान में नवीन मार्गों को स्वीकार भी नहीं कर रहे हैं। शनिवार को ताजिये नहीं निकलने से समाज के लोगों में मायूसी देखी गई। तो युवा वर्ग अपनी धार्मिक मान्यताओं व परम्पराओं के निर्वहन के लिए डिग्री व लाबाबहरीसिंह जैसे कस्बों में मातमी धुनों पर निकले ताजिये के जुलूस में शरीक हो जश्र मनाया। तो श्रावण में महिने में कावड़ यात्रा को स्टेट हाईवे से निकाल मालपुरा शहर में प्रवेश के बाद राजपुरा व गणवर सहित मालपुरा शहर में शिवजलाभिषेक के लिए कावड़ यात्रा समितियों ने प्रशासनिक स्वीकृति के लिए एसडीएम को पत्र सौंपा है। जिस पर स्वीकृति को लेकर संशय बरकरार है।

## आई फ्लू का कहर, रोजाना आ रहे 100 से अधिक मरीज

पावटा, (निसं)। मौसम में आए बदलाव के साथ ही पावटा उपखंड में आई फ्लू का संक्रमण तेजी से बढ़ रहा है। पिछले सप्ताहभर से उपखंड मुख्यालय के सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र पावटा की स्थिति यह है कि ओपीडी लगभग 800 के पार जा रही है। जिसमें रोजाना 5 से 100 मरीज आई फ्लू के आ रहे हैं। इसके साथ निजी क्लिनिक एवं अस्पतालों में भी आई फ्लू

के मरीजों की संख्या अचानक तेजी से बढ़ी है। इसे लेकर सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र पावटा प्रभारी देवेंद्र शर्मा, वरिष्ठ चिकित्सक एस.के.वर्मा, अशोक बाब्या, गुना हॉस्पिटल निदेशक डॉ. रवि अंजलि गुना, मैक्स संजीवनी हॉस्पिटल डॉ. सुरेंद्र यादव, एस जी एन हॉस्पिटल निदेशक डॉ. जयराम यादव, डॉ. दर्शन परिदार ने बताया कि पिछले चार-पांचदिन से 100 से ज्यादा मरीज आई फ्लू का उपचार लेने

पहुंच रहे हैं। मौसम में नमी के कारण आंखों का संक्रमण फैल रहा है। यह एक वायरल इन्फेक्शन है, जो एडिनो वायरस के कारण हो रहा है। आई फ्लू में आंख में लालाई आ जाना, आंखों से लगातार पानी आना, धुंधला दिखाई देना, पलक पर सूजन आ जाना, पलके आपस में चिपक जाना, आंख में खुजली के साथ राइ होना आदि लक्षण हैं। इसके साथ इस बार आंखों में खून के धब्बे भी बन

रहे हैं। संक्रमित हो चुके मरीज के संपर्क में आने से दूसरे व्यक्ति को भी यह बीमारी हो जाती है। शर्मा ने बताया कि इस बार संक्रमण की दर भी काफी ज्यादा है। किसी परिवार में एक व्यक्ति संक्रमित होने के बाद पूरा परिवार संक्रमित हो रहा है। ऐसे में किसी को आई फ्लू है तो उसके संपर्क में आने से बचें। अपने हाथ बार-बार साबुन और पानी से धोएं, अपनी आंखों को छूने से

बचें, यदि आपको वायरल कंजक्टिवाइटिस है तो दूसरों के साथ तोलिया, वॉश क्लॉथ या आंखों का मेकअप साझा करने से बचें। वही इससे बचाव के ये तरीके बताते हुए उन्होंने कहा कि पीड़ित व्यक्ति काला चश्मा लगाए, आंख को हाथ नहीं लगाए और हाथों को बार-बार सेनेटाइज करें, टीवी या मोबाइल देखने से बचें, आंखों को बार-बार छूएँ नहीं।

## बीकानेर में दो दिन से अनाथालय के 25 से ज्यादा बच्चे, करीब ढाई सौ मकान पानी से घिरे

जल भराव की इस समस्या के पीछे पूरा मामला गंदे पानी से अवैध कारोबार का है

बीकानेर, (कासं)। दोदिन से जोधपुर बाईपास के करीब की आधा दर्जन कॉलोनियों जलमग्न हैं। नगर निगम दो दिन में तमाम मशकत के बाद भी पाला नहीं बांध पाया। अगर पाला ना दूटता तो इन कॉलोनियों में ज्यादा जलभराव की दिक्कत नहीं होती लेकिन दो दिन से अनाथालय के 25 से ज्यादा बच्चे, ढाई सौ से करीब मकान पानी से घिरे हुए हैं। इसके पीछे मामला गंदे पानी से अवैध कारोबार का है। नाले के गंदे पानी को सरकारी जमीन पर रोक कर कुछ लोग उसे सब्जियां और घास उगाने वालों को बेचते हैं। दरअसल जोधपुर बाईपास के पास वल्लभगार्डन ट्रीटमेंट प्लांट के लिए पानी जाता है। कुछ लोग गंदे पानी को प्लांट में जाने

■ जोधपुर बाईपास के पास वल्लभगार्डन ट्रीटमेंट प्लांट के लिए पानी जाता है, कुछ लोग गंदे पानी को प्लांट में जाने से पहले ही रोककर पास की सरकारी जमीन पर इकट्ठा कर लेते हैं और सब्जियां और घास उगाने वाले किसानों को बेच देते हैं

से पहले ही रोककर जोधपुर बाईपास के पास सरकारी जमीन पानी इकट्ठा करते हैं। इसके लिए आसपास के खेत मालिकों ने मिट्टी से पाला बना दिया है। वहां से साइफन और पाइप लगाकर गंदे पानी से सब्जियां और हरी घास उगाई जाती है। जो पानी रोकता है वो किसानों को पानी बेचता है। खुद निगम आयुक्त बताते हैं कि 3000 रुपए में पानी बेचा जा रहा है। वहीं से गावों को हरा कारा देने के

लिए चारा आता और उसी गंदे पानी से उगी हुई सब्जियां आती हैं। बुधवार को आई बारिश से पहले यहां से एक किसान सिंचाई कर रहा था। उसने पाइप पाले के नीचे से लगाया। जब पानी ज्यादा आया तो उस पाइप के सहारे रिसाव शुरू हुआ और कुछ देर में पाला ढह गया। जिससे आसपास की कई कॉलोनियों में पानी जमा हो गया।

नगर विकास न्यास का इलाका है लेकिन ना तो ऐसे लोगों के खिलाफ

ना तो एफआईआर दर्ज कराई गई ना यहां पानी जमा होने से रोका जा रहा है। पाला बांध दिया गया। निगम ने आसपास की कॉलोनियों का पानी निकालने के लिए कई सड़कों को तोड़ा।

हरौनी की बात कि यूआईटी के अधिकारियों और इंजीनियर्स को पता है कि यहां गलत तरीके से पानी एकत्र होता है लेकिन कोई कदम नहीं उठाया गया। निगम के भी खेले निराले हैं। करमीसर में सीवरेज के लिए अमृत-2 में प्रोजेक्ट मंजूर हुआ। वहां सीवरेज के टैंकर हो रहे हैं। करीब 60 किलोमीटर लाइन डाली जाली है लेकिन नगर निगम ने इस इलाके में 37 लाख रुपए से सड़क बनवाने के लिए टेंडर लगा दिया। स्थानीय पाईप

शांति ने एतराज उठाते हुए कहा कि जब सीवरेज डाला जाएगा तो पूरी सड़क खुदेगी। पहले अगर सड़क बन जाएगी तो सड़क की दुर्दशा हो जाएगी। जूनागढ़ के पास सड़क पर दो जालियां लगी हैं। एक जाली में नाला पूरी तरह साफ है। वहां कोई पानी नहीं लेकिन उसके ठीक पीछे वाली जाली में पानी लबालब है। यानी नाला इन्हीं दो जालियां के बीच जाम है। निगम ने उसे खुलवाने के लिए कोई प्रयास नहीं किए लेकिन डेगरी बुध नाले के पास एक ट्रेक्टर लगाया। यहां से करीब 200 मीटर का पाइल डालकर कीर्तिस्तंभ के पास से गुजर रहा। आरयूआईटीपी के नाले में पानी निकाला जा रहा है। पोक मशीन वल्लभगार्डन इलाके में लगी है।

## राशिफल रविवार 30 जुलाई, 2023



पंडित अनिल शर्मा

प्र. सावन मास (अधिक), शुक्ल पक्ष, द्वादशी तिथि, रविवार, विक्रम संवत् 2080, मूल नक्षत्र रात्रि 9:33 तक, ऐन्द्रयन योग प्रातः 6:33 तक, बालव करण दिन 10:35 तक, चन्द्रमा धनु राशि में संचार करेगा। ग्रह स्थिति: सूर्य-कर्क, चन्द्रमा-धनु, मंगल-सिंह, बुध-सिंह, गुरु-मेष, शुक्र-सिंह, शनि-कुम्भ, राहु-मेष, केतु-तुला राशि में। आज सर्वार्थ सिद्धि योग सूर्योदय से रात्रि 9:53 तक है। रवियोग रात्रि 9:33 से आरम्भ होगा। आज प्रदोष व्रत और वैधृति पुण्य है। सर्वश्रेष्ठ चौघड़िया: चर 7:34 से 9:14 तक, लाभ-अमृत 9:14 से 12:33 तक, शुभ 2:13 से 3:53 तक। राहूकाल: 4:30 से 6:00 तक। सूर्योदय 5:54, सूर्यास्त 7:13

■ मेष नवीन कार्यों के संबंध में शुभ संदेश प्राप्त होगा। परिजनों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। बाहर जाने का कार्यक्रम बन सकता है। खान-पान का ध्यान रखें।

■ वृष चन्द्रमा आठ घण्टे में शुभ नहीं है। नवीन कार्यों को टालना ठीक रहेगा। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। शुभ कार्यों में व्यवधान सामने आ सकते हैं। यात्रा टालना ठीक रहेगा।

■ मिथुन परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा। परिवार में मनोरंजन के कार्यक्रम बन सकते हैं। अतिथियों के आगमन से उत्सव जैसा माहौल रहेगा।

■ कर्क विवादित मामलों से राहत मिल सकती है। किसी भी कारण से बना हुआ मन का भय समाप्त होगा। अस्त-व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा।

■ सिंह परिजनों के व्यवहार के कारण मन छिन हो सकता है। आवश्यक और महत्वपूर्ण मामलों में दुबिया बनी रहेगी। स्वभाव की तेजी पर नियंत्रण रखना ठीक रहेगा। परिवार में अतिथियों का आगमन बना रहेगा।

■ कन्या घर-परिवार में सुख-शांति बनी रहेगी। सुख-सुविधाएं बढ़ेंगी। परिवार में धार्मिक-सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं। मनोरंजन के लिए बाहर जाने का कार्यक्रम बन सकता है।

■ तुला महत्वपूर्ण कार्यों से संबंधित वार्ता सफल रहेगी। आवश्यक कार्य के लिए बाहर जाने का कार्यक्रम बन सकता है। आज अपने आवश्यक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। प्रयासों में उत्तम सफलता मिलेगी।

■ वृश्चिक आर्थिक कार्यों से अटके हुए कार्य बने लगेगे। अटक हुआ धन प्राप्त होगा। संभावित खोले से धन प्राप्त होगा। अपने अति आवश्यक और महत्वपूर्ण को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें।

■ धनु महत्वपूर्ण कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होगा। अटक हुए कार्य बने लगेगे। धार्मिक स्थान की यात्रा का कार्यक्रम बन सकता है। आवश्यक कार्य योजनानुसार बने लगेगे।

■ मकर घर-गृहस्था के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। पारिवारिक कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। मन में असंतोष बना रहेगा। आज शुभ कार्यों में व्यवधान सामने आ सकते हैं।

■ कुंभ आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। संभावित खोले से धन प्राप्त होगा। परिवार में मनोरंजन के कार्यक्रम बन सकते हैं। आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा।

■ मीन अपने अति आवश्यक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेगी। आवश्यक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बने लगेगे। स्वास्थ्य ठीक रहेगा।